

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 144

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो गी गनी श्रवया ॥ नमो गी
 काय शासनं मय दव दव गं गव्य
 र्थ विगया मासया र्थि व ॥ १
 दस्य थय या शा व क व लि स वि
 २ ॥ क गि का म स नि हा व



विद्वांग काय ॥ नमो गी प्रह्लां न
 रुनि वा प्रर्षां स नि श्रव स्य सा नः
 ॥ व द्यु र्वे ग गु वि था ता ॥ वा ज्ञा १
 रुय ४ स क द्वि या द्वि या र वे ग्ना
 शा दे वे ह्ने ह्ना यि ना म दि हा वाः

दि नो रु द यि त्वा गु स धि र्थ स्य नि सां य र्ग ॥ ३ ॥ स क र्ग रु द यि त्वा गु स नि वा स
 ल र य क ल ४ ॥ द्वा द सा ध गु द रि र्ग रु वि ध नि स द य ध ॥ ४ ॥ न ग ल्वा ग गा वा
 क म लि रि स द य र्थि व ४ द श म श्र न ग व ग मा ४ रु य री ग स म न ग ॥ ५ ॥ क
 व नि स र्चि वा का थ ४ द य म ग ल सां य र्ग ॥ आ क लं गु र्ग दृ शः पो व ज्ञा न य द्वा दि कः
 ॥ ६ ॥ य वि कृ य न गा वा जाः व सि ष्ट य म्मा दि जा ४ स मा धा र्थि कि म कृ श ४ क

होमां द्विजसकृमा ॥ १ ॥ वमिष्ट उवाच ॥ यजानां यमिष्टं तु तस्मिं
 न कृगयिजा ॥ २ ॥ दंशगमसाधनुः वैक्रसकदिरोसदा ॥ ३ ॥ गदासंवि
 लामनसाः साहयं यममदत्ता समादाय धनं दिव्यं दिवायूधसमन्विता ॥ ४
 ॥ अथमाबूहवलाहः गदानकृगमन्दलं संवादयो जनं वक्रः सः स
 यमिष्टं ॥ ५ ॥ १० ॥ आदिनियथमाथय ॥ याज्ञादसवथस्तदागवः

ति ३
 यगुकाश्च न दिव्यं मानवत्तविगुषिग ॥ ११ ॥ हंसवर्णद्वयिष्टकसदाकगुसः
 मृद्धिगा ॥ दिव्यमात्रामदावनी कीर्तितामुकुताश्रयि ॥ १२ ॥ विगडिगा
 गदाकासादिष्टं वंशस्तव ॥ आकर्षयन्ति वायं सदा वायं निष्ठाजयन् ॥
 १३ ॥ कर्लिकान्तं सनिह्लात्वा ॥ यविस्त्रकोललादिनि ॥ दृष्टदसवथवागु ॥
 गह्वीसकृदिमख ॥ १४ ॥ सदा वायं सनिदृष्ट ॥ स्यात्सर्वविमर्शनाद

सिन्धुगर्ह्यालोले विदं वन्नमकुविक्त्वा १३ ॥ सनेववा ॥ योवर्षंगववा
ऊचुः ४ वर्यपिपरांकल ४ ॥ दवास्त्रमनुया ४ ॥ सिद्धिविद्याधनो वग्न ४ ॥ १४ ॥
मयावलाकनराजा ४ ॥ यस्मिन्वा ४ ॥ यवजित ४ ॥ सुगर्हंगववा ऊचुः ४ ॥ गयसायोः ३
नयनवध ॥ १५ ॥ ॥ वयंकुलियका ४ ॥ मिः ४ ॥ ॥ योवदूनन ४ ॥ दसवथोवाव
॥ राहिनीरुदयिवा ४ ॥ नगकवांलयास्त्रन ४ ॥ गनिग ४ ॥ गगनं जायत ४ ॥ यथावतः

॥ अर्कमदिनि ॥ १४ ॥ गवत्कालं खयासोपि ॥ अथ मित्रमिमेव नं ॥ नवः
 मासु गनित्याह वयदत्वागु सांपगं ॥ १५ ॥ सयापतद्वनं वा ज्ञा कृत्तिकाया
 राव रुद्रा ॥ द्यादसाश्च गु इति चं गु विद्यन्ति कदावनं ॥ २० ॥ किं लिखेत्वाः
 मदि यान्ति गेलाक् कुरु विद्यन्ति नवं वनं गु संयाय दृष्टवामां वयार्थिव ॥
 २१ ॥ अथ यविधनूशाया ॥ रुतावावकतां ऊलि ॥ आत्वा सवभगि शीवि ॥ गद्य

नार्थविनायकः ॥ २२ ॥ वाजादशवधतार्कं भादविदमथाकनाग ॥ २३ ॥ नमानिचमयूवाय निः
माकस्यवितासाय गिरिकंथनिराशयः ॥ २४ ॥ नमाविष्ण
लायननिराशयः नमानिमीमदसारिदिधमजुङ्गाय ॥ २५ ॥ नमाविष्ण
वनीयाय शुक्लादवनिराशयः नमायूवगगाय ॥ २६ ॥ नमाविष्ण
२७ ॥ नमादिधीय शुक्लाय कालदृष्टिनामासुर्गः ॥ २८ ॥ नमस्ते कोटवाशायः ॥ २९ ॥

विज्ञायतेनमः ॥ ३० ॥ नमाधात्राय मोदाय सिखनाय कवाविना नमस्ते
वैशुशाय वलिमूर्खानमासुर्गः ॥ ३१ ॥ नमामधुनगानिखं निष्ठासाय
नमासुर्गः ॥ ३२ ॥ अष्टकाय नमासुर्गः ॥ ३३ ॥ स्मांभय नमासुर्गः ॥ ३४ ॥ सुय्यय
नमस्ते ॥ ३५ ॥ रास्त्राय दायः ॥ ३६ ॥ अष्टादशिनमस्ते ॥ ३७ ॥ सप्तदशिनमस्ते ॥ ३८ ॥
नमः ॥ ३९ ॥ कोवाविनाय कवाविनाय नमः ॥ ४० ॥ नमानमस्ते ॥ ४१ ॥ नमानमस्ते ॥ ४२ ॥

सुमंशा ३० ॥ गयसादयदहाय नित्यं जागवगायत ॥ हानयन्नमसु
स्य ॥ कास्ययात्मजसूनवे ॥ ३१ ॥ सुसाददासियाङ्क ॥ वृक्षवेदवसिष्ठना
॥ दवास्तुमनस्यैव दिव्यमण्डुङ्गनीयैः ॥ ३२ ॥ यमुयङ्गिसविरुगा ॥ ३
३२ ॥ त्वायाववाकिगासर्व ॥ नास्योत्तिसमूहग ॥ वृक्षसकमनूयैव वि
षयसफगायका ॥ ३३ ॥ वाक्कयक्षयगनीह ॥ वन्द्यक्षवलाकिक्क ॥

दंभाश्चनवज्रमादियाश्चवदमास्तथा ॥ ३४ ॥ त्वायावलाकिगास्तुयिना
स्योत्तिसमंगन ॥ यमादंकरमसो ॥ वलास्तारुगवसिगं ॥ ३५ ॥ वाक्क
मस्तुगदामोविगुदवाजामस्तवल ॥ अक्कविकल्पनिवायं ॥ द्रष्टवामांत्तरा
स्तव ॥ गनिश्चोवात्त ॥ ३६ ॥ सुक्ष्मसंगववाङ्क ॥ सुवनागनत्तारु
ग ॥ वन्द्यदिगस्त्यामि ॥ ३७ ॥ यानयन्नन्दन ॥ दसवथडवाव ॥ ३८ ॥

अथ यारुगिभोचिव. यो जाकायनकस्य वगुदेवा शुभमनुष्ठानां यभुयं किं
सवीचिनां॥ गनिधेयो वाच॥ ३८ ॥ गृहस्थपुत्रसहस्रयां शुभदयी जाका
सिमा ॥ अथ वायं वदन्त्यं यकाहनुदयामि ॥ ३९ ॥ त्वया याक
मिदं स्मरं यथैषा किं वामन ॥ न क कालं दिका वंता यो जाम् अमिग सर्वं
॥ ४० ॥ देवा शुभमनुष्ठानां सिधिविद्याधवा वग ॥ मृत् स्तुना स्तुना

वापि. जन्म यो जान कर्तुं वे ॥ ४१ ॥ यत्पुण्यं श्रद्धयायुक्तं सविस्मनसमाः
हितं समिपुत्र समरुच्यै प्रणिभामां दजामस ॥ ४२ ॥ मर्दिननु विस्यः
यान्. कान्ना न्ययुं रुयत्वा पृथिव्या जय गार्गं. रूतो वेव कर्मां जवि ॥ ४३
॥ तस्य यो जान वे वादं कविष्यामि कदाचनं. एष लज्ज न लज्ज वा दभा स्तः
गदसा शुभ ॥ ४४ ॥ यका मिस गं तस्य यो जाना न्य गदस्य वग ॥ न नैव

DH

144

यकायनऽपि जाम्कं जगद्विद् ॥ ४५ ॥ वरधयन्तु संयायऽवाडाद
सत्रथस्तदाऽनमकं तार्थमात्मानं ॥ नमस्कृत्य गनिध्वजऽ॥ ४६ ॥ सनि
धरदन्तुर्गं ॥ स्वास्तु नंगं द्यूयार्थिवऽ॥ स्यस्तु नसगंगं गवाऽ॥ पाककामाऽ॥ १
रवर्कदाऽ॥ ४७ ॥ नावदकोसिकायेवऽपि जवाऽमहामूनिऽ॥ गनि
ध्वजकं दारवाऽ॥ मूच्यन्तु नागसंसयऽ॥ ॥ इति गनिध्वजस्तवद्दयसमायऽ॥

धर्मस्तु बज्राधाय भुस्त श्री महाविहार